ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

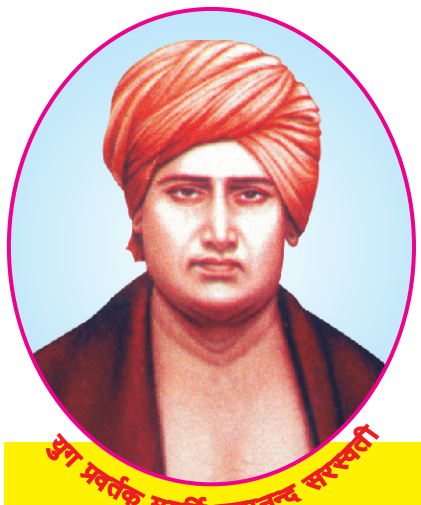

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 45 11 से 17 दिसम्बर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 पौ. कृ-05

विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज के साथ सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की विशेष भेंट

आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने के लिए गम्भीर चिन्तन

गत दिनों सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी से उनके पातंजलि योगपीठ में एक विशेष भेंट कर आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने हेतु विशेष विचार-विमर्श किया। स्वामी रामदेव जी ने, स्वामी आर्यवेश जी का बड़ी आत्मीयता से सम्मान करते हुए उनके द्वारा किये जा रहे आर्य समाज के कार्यों पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। स्वामी आर्यवेश जी ने विस्तार से अपनी योजनायें स्वामी रामदेव जी के समक्ष विचार हेतु प्रस्तुत करते हुए बताया कि वे पूरे आर्य समाज के संगठन को एकसूत्र में पिरोना चाहते हैं तथा आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप को एक बार पुनः अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करना चाहते हैं। इस अवसर पर स्वामी रामदेव जी ने भी अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन देते हुए स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया।

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामदेव जी, श्री बिरजानन्द एवं डॉ. यशदेव शास्त्री

योग गुरु स्वामी रामदेव जी के साथ चिन्तन करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

इससे पूर्व पातंजलि योगपीठ में उपचार हेतु रह रहे तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी से भी स्वामी आर्यवेश जी ने भेंटकर उनके स्वास्थ्य की कुशल क्षेम पूंछी तथा आर्य समाज के कार्यों में आशीर्वाद देने की प्रार्थना की।

इस अवसर पर सर्वश्री मधुर प्रकाश, श्री बिरजानन्द एवं डॉ. यशदेव शास्त्री, स्वामी आर्यवेश जी के साथ उपस्थित थे।

आर्य समाज बरनाला जिला-गुरदासपुर (पंजाब) में एक बार फिर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का पदार्पण

9 नवम्बर, 2014 को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी आर्य समाज बरनाला में एक विशाल कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पधारे थे तथा तभी आर्य समाज के पदाधिकारियों के द्वारा पुनः पधारने के विशेष आग्रह पर 29 नवम्बर, 2014 को सायं 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक होने वाले कार्यकर्ता परिचय सम्मेलन में स्वामी जी आचार्य सन्तराम तथा ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य के साथ आर्य समाज बरनाला में पधारे। इस कार्यक्रम का संयोजन श्री तरसेम लाल आर्य मंत्री आर्य समाज बरनाला ने किया। इस परिचय सम्मेलन में सभी उपस्थित वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का व्यक्तिगत परिचय कराया गया। स्वामी आर्यवेश जी सभी कार्यकर्ताओं के पास स्वयं गये तथा श्री तरसेम आर्य जी ने सभी का परिचय स्वामी जी से कराया। कार्यकर्ताओं ने स्वामी जी के साथ चित्र भी खिचवायें। इस अवसर पर स्वामी जी ने अपने उद्बोधन में कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज को तेजस्वी बनाने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि प्रत्येक कार्यकर्ता को आम जनता से सीधे जुड़ना पड़ेगा तथा उनकी समस्याओं के समाधान के लिए आगे आना होगा। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की आज पहले से भी अधिक आवश्यकता है राष्ट्र के सामने उपस्थित चुनौतियों का सामना आर्य कार्यकर्ताओं को ही करना होगा। स्वामी जी ने कहा कि देश की बहुसंख्यक युवा पीढ़ी के पास कोई ठोस कार्यक्रम नहीं है। आर्य समाज के कार्यकर्ता युवा पीढ़ी को पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद से बचाकर उनमें नैतिक शिक्षा देशभक्ति, ईमानदारी, आध्यात्मिकता के संस्कार डालने के लिए प्रयत्नशील हों। और इसके लिए उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से आर्य समाज से जोड़ना होगा तथा अपने कार्यक्रम सार्वजनिक स्थानों पर करने होंगे। स्वामी जी ने कहा कि जिस संस्था के कार्यकर्ता निष्ठावान होते हैं वही संस्था उन्नति करती है।

इससे पूर्व स्वामी आर्यवेश जी का सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत तथा सम्मान किया। इस विशेष सम्मेलन से कार्यकर्ताओं में निष्ठा तथा उत्साह की लहर स्पष्ट रूप से देखी जा सकती थी।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ढोंगी साधुओं के खिलाफ शंखनाद हो

– डॉ. वेदप्रताप वैदिक

ऐसे धूर्त संतों के विरुद्ध सबसे पहले सच्चे संतों को अपना शंखनाद करना होगा। वे लिहाज करेंगे तो वे अपने ही कुनबे को बदनाम होने में मदद करेंगे। महर्षि दयानंद ने अगणित आक्रमण सहे और अंत में विषपान भी किया, लेकिन अपनी पाखंड खंडिनी पताका को कभी झुकने नहीं दिया। दूसरा, समाज–सुधारक संस्थाओं को ऐसी ढोंगियों के विरुद्ध खुले–आम अभियान चलाना चाहिए। जो राजनेता इन ढोंगियों से अपना उल्लू सीधा करते हैं, उनकी कड़ी निंदा करनी चाहिए। तीसरा, आसाराम और रामपाल जैसे लोगों को जनता चाहे तो अपना 'गुरु' अवश्य धारण करे, क्योंकि उनके आचरण ने गुरुओं के पाखंड को बेनकाब कर दिया है। कबीर ने कहा भी है, सच्चा गुरु वही है, जो आंखें खोले।

हरियाणा सरकार और केंद्रीय गृह मंत्रालय बधाई के पात्र हैं। यदि उन्होंने धीरज और संयम से काम नहीं लिया होता तो बरवाला के सतलोक आश्रम की मुठभेड़ में सैकड़ों लोग मारे जाते। रामपाल के आश्रम में तैयारी उतनी घातक तो नहीं पर उसी तर्ज पर थी, जो 1984 में भिंडरावाला ने स्वर्ण मंदिर में कर रखी थी। महीनों तक चलने वाली रसद, रिवॉल्वर, बंदूकें, बम–गोले और तेजाब की बोतलें क्या–क्या नहीं मिला है, रामपाल के आश्रम से! रामपाल ने पुलिस पर हमला बोलने के लिए सेवानिवृत्त फौजियों की सेना भी खड़ी कर रखी थी। घायलों के इलाज के लिए पूरे अस्पताल जैसी तैयारी थी। 16 एकड़ के इस किलेनुमा आश्रम को रामपाल ने छोटे–मोटे राज्य में बदल दिया था। इस लघु–राज्य के महान राजा की तरह वह शासन और अदालत दोनों को खुली चुनौती देता था। उसके अनुयायी उसे 'परमात्मा' कहकर पुकारते थे। अदालत के कठोर आदेश के बावजूद वह 17–18 दिन तक राज्य सरकार को ब्लैकमेल करता रहा। वकीलों ने कहना शुरू कर दिया था कि रामपाल को कोर्ट के सामने पेश करना अब असंभव हो गया है। कोर्ट में उसकी पेशी के पहले उसके हजारों समर्थक अदालत और जजों को घेर लेते थे, लेकिन अब खट्टर सरकार की चतुराई के आगे रामपाल को भीगी बिल्ली बनना पड़ा। वह दुम दबाए अदालत पहुंच गया और सिर झुकाए कठघरे में खड़ा रहा। ढोंगी संत धराशायी हो गया।

वह संत या 'परमात्मा' होता तो कुछ चमत्कार तो दिखाता। चलो चमत्कार न सही, यदि उसमें जरा–सी भी बहादुरी होती तो पुलिस से लड़ते–लड़ते जान दे देता। यदि वह सचमुच अध्यात्म–पुरुष होता तो आमरण–अनशन करके प्राण त्याग देता। यदि उसमें जरा भी शर्म होती तो वह जहर खाकर सो जाता, लेकिन अपने आपको संत कहने वाला यह व्यक्ति कितना डरपोक और कायर निकला। उसने दो हफ्ते तक अपने भोले भक्तों को तोप का भूसा बना दिया। उन्हें सशस्त्र पुलिस का सामना करने के लिए तैनात कर दिया। उन्होंने पुलिस को डराने–धमकाने की भी कोशिश की, लेकिन पुलिस ने 'रक्तहीन क्रांति–सी' कर दी। जो छह लोग मारे गए हैं, वे मुठभेड़ के शिकार नहीं मालूम पड़ते हैं। वे भगदड़ या उस आश्रम के रहस्यमय कारनामों की बलि चढ़े हैं। रामपाल का यह आश्रम है या किसी अय्याश सामंत का विलास–महल! उस आश्रम के सामने आए चित्रों–ब्योरों पर कौन विश्वास करेगा कि यह किसी संत का निवास है?अपने आप को महान संत कबीर का अवतार कहने वाले इस व्यक्ति के जीवन में कबीर का रत्तीभर भी अस्तित्व नहीं है। कबीर ने साधु या संत किसे कहा है?संत वह है, जो अकेला चलता है। वह हजारों हथियारबंद लोगों को जमा नहीं करता है। कबीर के शब्दों में 'सिंहों के लहड़े नहीं, हंसों की नहीं पांत। लालों की नहिं बोरियां, साधु चले न जमात।।''

हजारों चेले–चेलियों को अपने चक्कर में फंसाए रखने वाला कोई व्यक्ति क्या सच्चा साधु हो सकता है?अपनी पूजा करवाना इन साधुओं की सबसे बड़ी वासना होती है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वे जादू–टोने, चमत्कार, झाड़–फूंक, हाथ की सफाई, तंत्र–मंत्र और ज्योतिष आदि कई तिकड़मों का सहारा लेते हैं। रामपाल भी इन तिकड़मों का उस्ताद है, यह उसके गिरफ्तार चेलों के बयानों से पता चलता है। किसी को संयोगवश कोई फायदा हो जाता है, तो वह इन गुरुओं, संतों और बाबाओं को भगवान मानने लगता है। और वे गुरु सब बात समझते हुए भी सचमुच यह मानने लगते हैं कि वे भगवान हैं और अलौकिक शक्तियों के स्वामी हैं। इन स्वामियों, साधुओं, गुरुओं की पोल महर्षि दयानंद सरस्वती ने अब से डेढ़ सौ साल पहले जमकर खोली थी। उन्होंने देश में सांस्कृतिक क्रांति का सूत्रपात किया था। वे स्वाधीनता–संग्राम के पितामह थे। आर्यसमाज के संस्थापक थे। उनके महान ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' पर रामपाल ने अनर्गल टिप्पणियां की थीं। हरियाणा के आर्य समाजियों ने उनका करारा जवाब दिया था।

रामपाल के ढोंगीपन को उजागर करने के कारण ही 2006 में हरियाणा के आर्य समाजियों और रामपाल के अंधभक्तों में जमकर मुठभेड़ हुई थी। उसमें एक व्यक्ति की हत्या भी हुई थी। इसी हत्याकांड के सिलसिले में रामपाल ने 43 बार अदालत के वारंट की अवमानना की। उसने राज्य नामक संस्था को नकार दिया। उसने अपने भाषणों और पर्चों में जजों पर रिश्वत लेने के आरोप लगाए और यह भी कहा कि उसे अदालत में घसीटने वाले जज ने उससे रिश्वत मांगी थी। उसे रिश्वत नहीं देने के कारण ही उसकी गिरफ्तारी के वारंट जारी कर दिए गए।

वास्तव में हरियाणा सरकार ने रामपाल को क्या पकड़ा, सभी ढोंगी साधुओं और संतों को यह चेतावनी दे दी है कि उन्हें कानून का उल्लंघन करने की छूट नहीं दी जा सकती। इस कार्रवाई के बाद अब सरकार को चाहिए कि इस तरह के साधुओं, संतों और बाबाओं के आश्रमों, उनके आय–व्यय, उनके पाखंडों और उनके पट–शिष्यों पर कड़ी निगरानी रखे। जो सच्चे साधु और संत हैं, वे तो इस तरह की निगरानी का स्वागत करेंगे। उनके पास छिपाने के लिए कुछ नहीं होता। उनका जीवन खुली किताब की तरह होता है। साधु और संत का वेश धारण करके जो लोग अनैतिक और अवैध धंधों में लिप्त रहते हैं, उनके पास हमारे कई नेतागण कतार लगाए रखते हैं, क्योंकि उनके लिए ये तथाकथित साधु वोट और नोट के मुख्य स्रोत होते हैं। अनैतिक और अवैध धंधों से जमा होने वाले मोटे पैसे और साधनों के आते ही ये सर्वस्व त्यागी साधु राजनीति में हस्तक्षेप करने लगते हैं। ये साधु जो नेताओं के गले के हार बनते हैं, उन्हें उनके गले का सांप बनते देर नहीं लगती।

ये ही साधु भिंडरावाला, रामपाल, आसाराम के रूप में पकड़े जाते हैं। अपराधी नेताओं को काबू करना तो आसान होता है, लेकिन धर्म की ओट में अपराध करने वाले लोग कहीं अधिक शातिर होते हैं। रामपाल की धूर्तता का आप जरा अंदाज लगाएँ। वह रोज दूध से नहाता था और उस दूध की खीर का प्रसाद भक्तों में बांटा जाता था। ऐसी धूर्तता कानून के डंडे से नहीं रोकी जा सकती, क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन होगा, लेकिन इसी धूर्तता के आधार पर ये ढोंगी साधु राजद्रोह करने का दुस्साहस करने लगते हैं। अकेले हरियाणा में एक नहीं, कई रामपाल हैं। सारे देश में ये फैले हुए हैं। जहां–जहां अज्ञान है, असुरक्षा है, अभाव है, वहां–वहां रामपाल हैं।

ऐसे धूर्त संतों के विरुद्ध सबसे पहले सच्चे संतों को अपना शंखनाद करना होगा। वे लिहाज करेंगे तो वे अपने ही कुनबे को बदनाम होने में मदद करेंगे। महर्षि दयानंद ने अगणित आक्रमण सहे और अंत में विषपान भी किया, लेकिन अपनी पाखंड खंडिनी पताका को कभी झुकने नहीं दिया। दूसरा, समाज–सुधारक संस्थाओं को ऐसी ढोंगियों के विरुद्ध खुले–आम अभियान चलाना चाहिए। जो राजनेता इन ढोंगियों से अपना उल्लू सीधा करते हैं, उनकी कड़ी निंदा करनी चाहिए। तीसरा, आसाराम और रामपाल जैसे लोगों को जनता चाहे तो अपना 'गुरु' अवश्य धारण करे, क्योंकि उनके आचरण ने गुरुओं के पाखंड को बेनकाब कर दिया है। कबीर ने कहा भी है, सच्चा गुरु वही है, जो आंखें खोले।

– भारतीय विदेश नीति, परिषद के अध्यक्ष
e-mail : dr.vaidik@gmail.com

महिला आर्य समाज ने मनाया 20वाँ स्थापना दिवस

महिला आर्य समाज मानसरोवर जयपुर ने अपना 20वां स्थापना दिवस सामवेद परायण यज्ञ में आहुतियों के साथ मनाया। 13 से 16 नवम्बर तक आयोजित यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद (म. प्र.) के वैदिक आचार्य आनन्द पुरुषार्थी ने वैदिक मंत्रों की सुग्राह्य व्याख्या की। वेद पाठ जयपुर की बहनों श्रीमती सुमति व श्रुति शास्त्री द्वारा हुआ। इस दौरान मुजफ्फरनगर के भजनोपदेशक पं. संदीप ने भजनोपदेशों से सरसता बिखेरी। आर्य समाज मानसरोवर के ही सर्व श्री जवाहर लाल वधवा, सुभाष मेहरा, पं. यादराम, सुनीता नारायण एवं सुधा मित्तल की भी प्रस्तुतियां सराही गई।

पूर्णाहुति उपरान्त अंतिम सत्र को संबोधित करने वालों में श्रीमती सुमित्रा, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष यशपाल 'यश' प्रमुख रहे।

महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सरोज कालड़ा ने अन्य सदस्याओं के साथ दक्षिणा एवं वस्त्रादि से आचार्य, भजनोपदेशक, वेद पाठिनी एवं विद्वानों का सम्मान किया।

आर्य समाज की महत्ता एवं स्वामी दयानन्द के कृतित्व को सन्दर्भित करते हुए कुशल मंच संयोजन डॉ. सन्दीपन आर्य ने किया। ऋषि लंगर प्रसादी के साथ समारोह का विसर्जन हुआ। मानसरोवर के पौराणिक श्रद्धालुओं में भी यज्ञ एवं वेदों के प्रति रुचि जाग्रत हुई।

– *ईश्वर दयाल माथुर*

घर-घर में सत्यार्थ प्रकाश पहुँचाने का सुनहरा अवसर
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा
एक बार फिर नये क्लेवर में प्रकाशित
महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ
सत्यार्थप्रकाश
मूल्य : 80 रुपये
आकर्षक एवं सुन्दर बहुरंगी आवरण तथा बढ़िया कागज
23X36 के 16वें साईज में 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध है।
प्राप्ति स्थान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

सामाजिक क्रांति के शाश्वत सूत्र

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

...गतांक से आगे

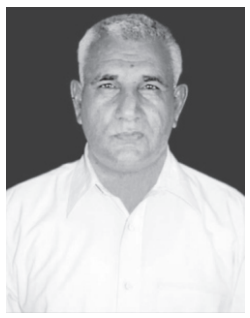

व्यक्ति जन्म से ही साम्प्रदायिकता की गुलामी अपनाने को बाध्य है क्योंकि जन्म से कोई भी व्यक्ति यदि मुस्लिम माँ की कोख से पैदा होगा तो मुस्लिम कहलायेगा बिना कुरआन की दीक्षा लिए। ईसाई माँ की कोख से पैदा होगा तो ईसाई कहलायेगा बिना बाइबिल की दीक्षा लिए। सिक्खनी की कोख से जन्म लेगा तो सिख कहलायेगा बिना गुरु ग्रन्थ साहब की दीक्षा लिए। धर्म व्यक्ति पर लादा नहीं जाता, नीर-क्षीर विवेक से अपनाया जाता है जबकि ठीक इसके विपरीत सम्प्रदाय अपनाया नहीं जाता व्यक्ति पर लादा जाता है। एक समूह विशेष में रहने की बाध्यता, एक विशेष बोली बोलने की बाध्यता, एक विशेष पहनावा पहनने की बाध्यता, एक विशेष उपासना स्थल में जाने की बाध्यता, एक विशेष वर्ग में विशेष तरीके से शादी करने की बाध्यता, कुछ विशेष बाहरी चिन्ह अपनाने की बाध्यता जो हमे अलग पहचान दे सके, गुलामी की ये ढेरों सौगातें कब व्यक्ति को अपने पाश में बांधती चली जाती हैं, पता ही नहीं चलता। एक रस्म के रूप में व्यक्ति इन सबको अपनाता चला जाता है बिना उन पर विचार किये, विचार करने का उसका अधिकार ही छीन लिया गया है, इसका आभास भी उसे नहीं हो पाता। सम्प्रदाय की फितरत अर्थात् नियति यही होती है कि वह कोख में ही बच्चे को दबोच लेता है, अपना बना लेता है जिसे वह अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानता है। हम बाजार में सब्जी खरीदने जाते हैं तो भाव तय करने से पूर्व सब्जी की तहकीकात करते हैं कि वह ताजी है या बासी है, उस पर रंग या तेल का लेपन तो नहीं किया गया है, उसमें कीड़ा तो नहीं लगा है, वह जैविक जन्य है अथवा रसायन जन्य, नहर-नलकूप की उपज है अथवा गन्दे नाले की। लेकिन मजहब के बारे में ऐसी तहकीकात करना कुफ्र है, पाप है, अधर्म है। इस कुफ्र, पाप, अधर्म के विरुद्ध विद्रोह करना, शंखनाद करना, उठ खड़ा होना ही धर्म है। धर्म किसी को जबरन अपना अनुयायी नहीं बनाता, यह काम अधर्म का है, भले ही उसे कोई भी नाम क्यों न दिया जाए।

सम्प्रदायों का कुछ उज्ज्वल पक्ष भी हो सकता है जिसे मानवता की दुहाई देते हुए हमारे सामने परोसा जा सकता है। लेकिन सम्प्रदाय के ये अंश उसकी अपनी धरोहर न होते हुए परम्परा की देन होते हैं। विशेषत: ऐसी उदारता व आत्मीयता स्वधर्मियों तक ही सीमित रहती है। सम्प्रदायों का आकलन और विश्लेषण हमें उसकी ऐतिहासिक विरासत से ही करना चाहिए। उसमें परस्पर विरोधी बातों की भरमार होती है जो संशय पैदा करती है, उसमें अवैज्ञानिक बातें भरी होती हैं जो उसकी विश्वसनीयता पर प्रश्नचिन्ह लगाती हैं, तुलनात्मक अध्ययन करने से हमें उसमें अनेक विषमताएँ दृष्टिगोचर होती हैं, अनेक रूढ़ियों की बाध्यता हमें उसमें नजर आती है, आत्मा-परमात्मा प्रकृति को लेकर अनेक अविश्वसनीय अवधारणाएँ हमें उसमें दिखाई देती हैं, पुनर्जन्म और कर्मफल को लेकर अजीब बातें हमें वहाँ पढ़ने को मिलती हैं। सम्प्रदायों का धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष इसी दृष्टि से अधिक सबल और प्रामाणिक नहीं ठहरता। यदि सम्प्रदायों की अच्छाईयाँ परम्पराओं पर आश्रित हैं तो उसकी अपनी मौलिकता और विशेषता क्या रह जाती है?चन्द्रमा सूर्य के प्रकाश से यदि चमकता है तो इसमें श्रेष्ठता और गुणवत्ता चाँद की रहेगी या सूरज की?अत: भविष्य की आशा पंथ, सम्प्रदाय, मजहब, रीलीजन नहीं धर्म और अध्यात्म ही हो सकते हैं।

जातिवाद

सम्भव है जातिवाद का जन्म किन्हीं विपरीत परिस्थितियों में सुरक्षा कवच के रूप में हुआ हो। भारतीय परम्परा पर दृष्टिपात करें तो प्राचीनकाल में यहाँ जातिवाद का नामोनिशान नहीं था बल्कि वर्ण व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था थी। वर्ण व्यवस्था में चार वर्ग थे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जो गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित थी और गुरुकुल अथवा प्रशासन इसका निर्धारण करते थे। वैदिक युग की वर्णव्यवस्था परिवर्तनशील थी अर्थात् व्यक्ति गण, कर्म, स्वभाव में उच्च स्तर प्राप्त कर निचले वर्ण से ऊपरी वर्ण में जा सकता था और विपरीत आचरण से ऊपरी वर्ण से निचले वर्ण में लाया जा सकता था। लेकिन बाद में यह वर्णव्यवस्था जन्म, जाति, व्यवसाय, विवाह के आधार पर स्थायी होती चली गई। अत: अधिक सम्भावना यही है कि वर्णव्यवस्था से ही जातिवाद का जन्म हुआ। विलोम-अनुलोम विवाह और व्यवसाय भी जातिवाद के मुख्य कारक रहे हैं। बाद में ब्राह्मणों ने भी जातिवाद का विस्तार कर क्षत्रिय, वैश्यों, शूद्रों की एकता व संगठन को कमजोर किया। प्रारम्भ में वर्ण के बाद कुल, वंश, गोत्र, गुण को महत्त्व प्राप्त रहा, इसके बाद ही जातिवाद का जन्म हुआ। महाभारत काल में हमें जातिवाद का कोई लक्षण दिखाई

साम्प्रदायिकता/जातिवाद /पाखण्ड/शोषण/नारी विष-वृक्ष पल्लवित, उसे उखाड़ फेंकना ही अपने इस राष्ट्रधर्म का /भ्रष्टाचार/नशाखोरी उत्पीड़न से जो पुष्पित फलित हो रहा है राष्ट्रधर्म है। क्या आप पालन कर रहे हैं?

नहीं देता अत: इसे अवैदिक परम्परा ही मानना होगा। जातिवाद के जन्म के चाहे जो कारण रहे हों लेकिन आज के संदर्भ में यह वरदान कम और अभिशाप अधिक है।

हिन्दू समाज में, काका कालेलकर व मण्डल कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार, आज लगभग तीन-चार हजार जातियाँ हैं। वर्णव्यवस्था भले आज न रही हो लेकिन उसके चार ढाँचे आज भी बरकरार हैं। कौन जाति चारों वर्णों में से किस एक वर्ण से सम्बद्ध है इसका परिज्ञान सभी जातियों को रहता है क्योंकि परम्परा छिन्न-भिन्न नहीं हुई है। भाटों ने क्षत्रिय जातियों का इतिहास अपनी पोथियों में कैद करके रखा हुआ है। हरिद्वार के पण्डों के पास भी ऐसी बहियों का रिकॉर्ड उपलब्ध है। जाति-व्यवस्था उस व्यक्ति समूह का परिणाम है जो परम्परागत व्यवसायों को अपनाये हुए हैं। प्रारम्भ में जब जातिवाद का जन्म नहीं हुआ था एक ही परिवार वाले अनेक काम स्वयं कर लेते थे लेकिन बाद में धीरे-धीरे व्यवसाय आधारित, जातियाँ बनती चली गईं। आज इसमें परिवर्तन आ रहा है और लोग अपने पुश्तैनी धंधे छोड़कर दूसरे धंधे अपनाने लगे हैं। सरकारी व गैर सरकारी नौकरियों ने पुश्तैनी धंधों को कमजोर कर दिया है। कुछ धंधों ने अपने को इतना अधिक विकसित और शान-शौकत वाला बना लिया है कि उसे उच्च वर्ण के लोग भी अपनाने लगे हैं। जूतियों की दुकान आज ब्राह्मण खोले बैठे हैं जबकि इस समूचे व्यवसाय पर कभी चर्मकारों का आधिपत्य था। जाति-व्यवस्था हिन्दू जाति में थी इस्लाम और ईसाइयत में नहीं थी। लेकिन जब बड़े पैमाने पर हिन्दुओं विशेषत: दलित जातियों का धर्मांतरण हुआ तो यह दोष मुस्लिम और ईसाई समुदायों में भी जा पहुँचा। जिस वैदिक वर्ण व्यवस्था को जातिवाद का जनक माना जाता है वह मूलत: तर्कसंगत और विज्ञान सम्मत व्यवस्था थी और यह व्यवस्था हर समाज व राष्ट्र में देखी जा सकती है। समाज को शिक्षित-दीक्षित करने वाला वर्ग, राष्ट्र का संचालन व रक्षा करने वाला वर्ग, समाज का भरण-पोषण करने वाला वर्ग, समाज की सेवा करने वाला वर्ग-मूलत: ये चार वर्ग ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे।

जाति व्यवस्था के शुभ और अशुभ दोनों पक्ष रहे हैं। जाति व्यवस्था के कारण जो अलग-अलग व्यक्ति समूह बने उससे उनके द्वारा अपनाये गये व्यवसाय पुश्तैनी बनते चले गये जिससे शिल्प विशेष में कौशल बढ़ा, गुणवत्ता बढ़ी, निखार आया, उसका पोषण, संरक्षण तथा विस्तार द्रुत गति से हुआ। संगठित रूप में जातियों ने अपने रक्षा कवच मजबूत किये, अधिकार प्राप्ति के लिए अपने-अपने मंच तैयार किये। सामुदायिक कार्यों कुआं, बावड़ी, तालाब, अखाड़ों, धर्मशाला, औषधालय, विद्यापीठ आदि के निर्माण में भी ये जातियाँ सक्रिय रही हैं। जातियों की अपनी-अपनी पंचायतें भी विकसित हुईं जो पारस्परिक झगड़ों को बजाये अदालतों में ले जाने के पंचायत स्तर पर निपटा लेती थीं। खेती जैसे कार्यों में डंगवारा चलता था और विवाह-शादी में न्यौंदे की प्रथा थी जिसमें गाँव के सभी रसूखदार परिवार शादी में आर्थिक सहयोग करते थे। सुख-दु:ख में सभी एक-दूसरे को सहयोग देने को एकत्र हो जाया करते थे। वैवाहिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में भी जात-पात का विशेष योगदान रहा है। जातिगत संगठनों व पंचायतों ने सामाजिक रूढ़ियों व कुरीतियों को मिटाने के लिए लम्बा संघर्ष किया है, पारस्परिक झगड़ों व तनावों को मिटाने में अहम भूमिका निभाई है, वैवाहिक कुरीतियों से लोहा लेकर सर्वमान्य व्यवस्था प्रदान की है सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक चेतना के आन्दोलनों में निर्णायक भूमिका निभाई है।

एक गाँव में भले ही किसी उच्च जाति का प्रभुत्व और वर्चस्व रहता था लेकिन उसी गाँव में एक अथवा एकाधिक परिवार ब्राह्मण, नाई, तेली, झींवर, जुलाहे कुम्हार, चमार आदि के भी रहते थे जो क्रमश: भोजन बनाते व संस्कार सम्पन्न कराते थे, शेव-कटिंग करते थे, तेल की घानी चलाते थे, घरों में पानी भरते थे, खेस, चादर-दरी आदि बुनते थे, मिट्टी के बर्तन घड़े-माट-हाण्डी, चिल्म, कसोरे बनाते थे और जूते गांठते व कृषि-पशु पालन में हाथ बंटाते थे। ये सभी अपना-अपना छमाही पारिश्रमिक असाढ़ी व श्रावणी की फसल से लेते थे। इस प्रकार जाति व्यवस्था पर खड़े गांव स्वावलम्बी थे, आत्म-निर्भर थे और उनमें पारस्परिक विश्वास और सौहार्द बना रहता था।

यह सही है कि आजादी मिलने, दलगत राजनीति के चलने, जागरूकता अभियानों के शुरू होने से यह समूचा विश्वास और सौहार्द चौपट हो गया है। विशेषत: चुनावी पंचायती व्यवस्था लागू होने के कारण आरक्षण व्यवस्था को लेकर, हरिजन एक्ट के दुरुपयोग को लेकर, कुछ चुनाव क्षेत्रों के आरक्षित घोषित होने के कारण, एक ही गाँव के वर-वधु को आपस में शादी करने की अदालती छूट के कारण, न्यूनतम मज़दूरी तय होने तथा फसल का लाभकारी मूल्य न मिलने के कारण भी गाँव का परम्परागत वातावरण दूषित व श्रीहीन होता गया है। चकबन्दी के कारण, पानी की उपलब्धता घरों में होने तथा व्यक्ति के आत्मकेन्द्रित होने से, लिंगानुपात में ईजाफा होने से, शिक्षा का स्तर सुधरने से, महंगाई बढ़ने से गाँव का पुराना चेहरा निरन्तर बदलता रहा है जिसके फलस्वरूप कुंओं और चौपालों पर, खेत की मेढ़ों पर अब लोग इकट्ठे होते, हुक्का गुड़गुड़ाते व नहाते दिखाई नहीं देते। अन्तर्जातीय विवाह शुरू होने से जाति-बन्धन ढीले पड़ने लगे हैं। हाँ, आरक्षण की माँग को लेकर, चुनाव को लेकर, दो जातियों के बीच उठे किसी विवाद को लेकर कभी-कभार जातिवाद उबाल, संगठन और अराजकता देखने को अवश्य मिल जाती है।

जातिवाद व्यक्ति में अभिजात्यता, अहंकार, अन्याय व शोषण वृत्ति पैदा करता है, एक-दूसरे पर हावी होने व दबोचने की इच्छा पैदा करता है, सभी सुविधाओं पर अपना हक जताने की कुण्ठा पैदा करता है, दूसरों के मामूली दोष को बढ़ा-चढ़ा कर देखने की प्रवृत्ति पैदा करता है, दूसरों की बहन-बेटियों को अपनी जागीर समझने की हवस पैदा करता है, निम्न जातियों के श्रम को बेगार में बदलने की सोच पैदा करता है, सामाजिक सौहार्द व समरसता में पलीता लगाने में अहम भूमिका निभाता है, जातिवाद का यह नकारात्मक पक्ष है जो किसी भी सभ्य, विकासशील, उन्नत समाज के लिए अभिशाप है।

शेष अगले अंक में

एस. एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल अवाखां, दीनानगर (पंजाब) का दो दिवसीय वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह सोल्लास सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता

एस.एस. डी. ए. वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल अवाखां दीनानगर (पंजाब) का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह 29 से 30 नवम्बर, 2014 तक अत्यन्त उल्लासपूर्ण वातावरण में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। ज्ञातव्य हो कि एस. एस. डी. ए. वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल दीनानगर का एक प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान है। इस संस्था के प्रधान श्री अरविन्द मेहता दीनानगर के प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं प्रसिद्ध समाजसेवी हैं उनके निर्देशन में उक्त स्कूल निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। उनके पास संस्था का संचालन करने वाली योग्य शिक्षिकाओं एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की टीम है जिनके कुशल प्रबन्धन में यह शिक्षण संस्था अपना एक विशिष्ट स्थान बनाये हुए हैं। ढाई से तीन हजार विद्यार्थी इस शिक्षण संस्थान में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

अपनी शैक्षिक विशेषताओं के कारण बहुचर्चित एस. एस. डी. ए. वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था। स्वामी जी ने इस अवसर पर जहाँ प्रतिभावान विद्यार्थियों को स्मृति-चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया, वहीं अन्य गणमान्य महानुभावों को भी स्वामी जी के कर-कमलों से स्मृति चिन्ह दिलवाकर सम्मानित किया गया। 29 नवम्बर को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में गुरुदासपुर के असिस्टैन्ट कमिश्नर श्री सौरभ कुमार अरोड़ा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में गुरुदासपुर के डी. एस. पी. ठाकुर कुलदीप सिंह विशेष रूप से उपस्थित थे। 30 नवम्बर को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति प्रो. स्वतन्त्र कुमार ने पधार कर समारोह की शोभा बढ़ाई।

इस भव्य कार्यक्रम में अपने ओजस्वी उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने छात्र-छात्राओं एवं उपस्थित श्रोताओं के समक्ष देश की वर्तमान भयावह परिस्थितियों की चर्चा करते हुए नैतिकता, ईमानदारी, देशभक्ति तथा आध्यात्मिक मूल्यों की आवश्यकता पर बल दिया। स्वामी जी ने छात्र-छात्राओं का आह्वान करते हुए कहा कि वे उस महान देश की सन्तान हैं जिसका गौरवपूर्ण इतिहास स्वर्णिम अक्षरों से अंकित है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, महर्षि मनु तथा चाणक्य, महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, शहीदे आजम भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल आदि महान व्यक्तित्व इसी महान भारत भूमि पर पैदा हुए हैं और उन्होंने अपने अनुकरणीय कार्यों से भारत देश का नाम चमकाया। स्वामी जी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि बड़े दुःख का विषय है कि आज का युवा वर्ग दिशा-विहीन होकर पथभ्रष्ट हो रहा है और अपनी प्राचीन गौरवपूर्ण परम्पराओं, मर्यादाओं, वैदिक संस्कृति के मूल मन्तव्यों से दूर होता जा रहा है। स्वामी जी ने कहा कि लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति भारतीय युवा वर्ग को मानसिक रूप से गुलाम बना रही है। पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर युवाओं में नैतिकता, धार्मिकता जैसे मानवोचित गुण गायब होते जा रहे हैं। उच्छृंखलता, अनुशासनहीनता, अश्लीलता तथा उद्दण्डता जैसे अवगुण युवाओं में बहुतायत से पाये जा रहे हैं। आज अधिकांश युवा वर्ग पाश्चात्य वेशभूषा, खान-पान तथा उसी मानसिकता से ग्रस्त होता जा रहा है जो हमारे देश के भविष्य के लिए बेहद चिन्ता की बात है। स्वामी जी ने छात्र-छात्राओं को ईमानदारी, देशभक्ति तथा आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि देश व समाज की वर्तमान परिस्थितियों में युवाओं को वेद के आधार पर सही दिशा देने की आवश्यकता है आज नैतिकता, ईमानदारी, सेवा एवं कर्त्तव्य परायणता आदि गुणों को युवाओं में संरक्षित करने की आवश्यकता है। मात्र शिक्षित होने से किसी व्यक्ति का विकास नहीं होता उसके जीवन को संस्कारित करना होता है। स्वामी जी ने कहा कि हम तेजस्वी युवा भारत के निर्माण को मूर्त रूप देना चाहते हैं इसके लिए सभी युवा संगठित होकर हमारा सहयोग करें।

इस अवसर पर प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी ने स्कूल की प्रगति और उन्नति की प्रशंसा करते हुए श्री अरविन्द मेहता जी की प्रशस्ति की और विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे देश के भावी कर्णधार हैं और उन्हें अपने जीवन को तपस्वी बनाना चाहिए। प्रोफेसर साहब ने आर्य समाज के इतिहास पर भी प्रकाश डाला। सरदार अमर दीप सिंह सैनी ने भी स्कूल की प्रगति को बेहद सन्तोषजनक बताते हुए छात्रों की प्रगति की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। मुख्य अतिथि असिस्टैंट कमिश्नर श्री सौरभ अरोड़ा ने विद्यार्थियों को परिश्रम करने तथा जीवन में सात्विकता लाने की नसीहत दी। उन्होंने स्वामी आर्यवेश जी द्वारा चलाये जा रहे तेजस्वी युवा भारत अभियान में पूर्ण सहयोग देने की भी घोषणा की। स्वामी जी के साथ आचार्य सन्तराम जी तथा ब्र. दीक्षेन्द्र जी भी उपस्थित थे।

ज्ञातव्य हो कि श्री अरविन्द मेहता जी के शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे तीनों संस्थान एस. एस. डी. ए. वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल तथा किड्स केयर इण्टर नेशनल स्कूल (बचपन) अपनी उच्च स्तरीय शिक्षा के लिए प्रसिद्ध है। इस पूरे आयोजन में संस्था के प्रधान श्री अरविन्द मेहता, मैनेजर श्री अवतार कृष्ण गुप्ता, सचिव श्रीमती मधुर भाषिणी तथा प्रिंसिपल श्रीमती कमलेश शर्मा आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया।

19 दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष

'भारत माता के वीर आदर्श सपूत शहीद रामप्रसाद बिस्मिल'

–मनमोहन कुमार आर्य

जिन लोगों ने देशवासियों को अपमानित जीवन जीने से बचाया है, उन्हें हम भूल चुके हैं। इसे देशवासियों की उन हुतात्मा बलिदानियों के प्रति कृतघ्नता ही कह सकते हैं। ऐसा क्यों हुआ?इसका सरल उत्तर है कि स्वतन्त्रता के बाद देश में जो वातावरण बना और देश भक्ति को शिक्षा पद्धति में अनिवार्य विषयों में सम्मिलित नहीं किया, उसके कारण ही ऐसा हुआ है। आज की युवा पीढ़ी ने स्वदेशी सभी अच्छी चीजों को छोड़ दिया है और पाश्चात्य बुरी चीजों को अविवेकपूर्ण ढंग से अपनाया है व अपनाती जा रही है। ऐसे वातावरण में शहीदों के जन्म व बलिदान दिवस हमें अवसर देते हैं कि हम तत्कालीन परिस्थितियों में उनके द्वारा किए गये कार्यों पर दृष्टिपात कर उनका मूल्यांकन करें व उनसे शिक्षा ग्रहण कर अपना कर्तव्य निर्धारित करें। भारत माता को विदेशी आक्रान्ताओं से, जो देशवासियों को पल-प्रतिपल अपमानित करते थे, हमारा प्राचीन धर्म व संस्कृति जिनके शासन में असुरक्षित थे, देश की सम्पदाओं को लूटते थे, देशवासियों के श्रम का व उनका बौद्धिक शोषण करते थे, जिन्होंने हमारी अस्मिता को अपमान व अज्ञान के अन्धकार से कुचल दिया था, उनसे मुक्त कराने के लिए अपने तन, मन व धन को मातृभूमि की स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अर्पित करने वाले भारत माता के इस महान वीर सपूत का नाम है पं. रामप्रसाद बिस्मिल। शहीद बिस्मिल ने 29 वर्ष की भरी जवानी में 19 दिसम्बर, 1927 को फांसी के फन्दे को चूम कर अपना बलिदान दिया।

आज की युवापीढ़ी आधुनिक युग के निर्माता देशभक्तों को भूल चुकी है जिनकी दया, कृपा, त्याग व बलिदान के कारण आज हम स्वतन्त्र वातावरण में सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि आज की युवा पीढ़ी प्रायः धर्म, जाति व देश के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग नहीं है वा विमुख है। यह एक आश्चर्य है कि हमें देश-विदेश के क्रिकेट आदि खिलाड़ियों, फिल्मी अभिनेताओं, बड़े-बड़े घोटाले व भ्रष्टाचार करने वाले राजनीतिज्ञों के नाम व कार्यों के बारे में तो ज्ञान है परन्तु जिन लोगों ने देशवासियों को अपमानित जीवन जीने से बचाया है, उन्हें हम भूल चुके हैं। इसे देशवासियों की उन हुतात्मा बलिदानियों के प्रति कृतघ्नता ही कह सकते हैं। ऐसा क्यों हुआ?इसका सरल उत्तर है कि स्वतन्त्रता के बाद देश में जो वातावरण बना और देश भक्ति को शिक्षा पद्धति में अनिवार्य विषयों में सम्मिलित नहीं किया, उसके कारण ही ऐसा हुआ है। आज की युवा पीढ़ी ने स्वदेशी सभी अच्छी चीजों को छोड़ दिया है और पाश्चात्य बुरी चीजों को अविवेकपूर्ण ढंग से अपनाया है व अपनाती जा रही है। ऐसे वातावरण में शहीदों के जन्म व बलिदान दिवस हमें अवसर देते हैं कि हम तत्कालीन परिस्थितियों में उनके द्वारा किए गये कार्यो पर दृष्टिपात कर उनका मूल्यांकन करें व उनसे शिक्षा ग्रहण कर अपना कर्तव्य निर्धारित करें। भारत माता को विदेशी आक्रान्ताओं से, जो देशवासियों को पल-प्रतिपल अपमानित करते थे, हमारा प्राचीन धर्म व संस्कृति जिनके शासन में असुरक्षित थे, देश की सम्पदाओं को लूटते थे, देशवासियों के श्रम का व उनका बौद्धिक शोषण करते थे, जिन्होंने हमारी अस्मिता को अपमान व अज्ञान के अन्धकार से कुचल दिया था, उनसे मुक्त कराने के लिए अपने तन, मन व धन को मातृभूमि की स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अर्पित करने वाले भारत माता के इस महान वीर सपूत का नाम है पं. रामप्रसाद बिस्मिल। शहीद बिस्मिल ने 29 वर्ष की भरी जवानी में 19 दिसम्बर, 1927 को फांसी के फन्दे को चूम कर अपना बलिदान दिया। उनके जीवन पर दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि उनके जीवन का उद्देष्य विदेशी शासक अंग्रेजों की पराधीनता से देश को मुक्त कर सभी देशवासियों के प्राचीन धर्म व संस्कृति की रक्षा, सम्मानजनक जीवन के साथ देश की एकता व अखण्डता की रक्षा करते हुए सबकी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करना एवं वैदिक आदर्श सत्य व न्याय पर आधारित शासन स्थापित करना था।

रामप्रसाद बिस्मिल के पिता श्री मुरलीधर, चाचा श्री कल्याणमल तथा पितामह श्री नारायणलाल थे। आपके चार भाई व पांच बहने थी जिनमें आप सबसे बड़े थे। पिता कुछ शिक्षित थे। ग्वालियर से आकर शाहजहांपुर, संयुक्त प्रान्त में बसे थे। मुरलीधर जी ने पहले नगर पालिका में 15 रुपये मासिक पर सर्विस की और इसके बाद कोर्ट में स्टाम्प पेपर बेचने का काम किया। आपके परिवार में पुत्रियों को जन्म लेते ही मार दिया जाता था परन्तु आपके पिता ने यह कुकृत्य नहीं किया यद्यपि आपके दादाजी का परामर्श था कि पुत्रियों को मारा जाये। रामप्रसाद जी का जन्म 11 जून सन् 1897 को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी व उर्दू में हुई। अपनी धर्म पारायणा माता जी की प्रेरणा से आपने अंग्रेजी भी सीखी। बचपन में आपको अनेक बुरे व्यसन लग गये। घर के पास ही आर्य समाज मन्दिर था। वहां जाने लगे। मन्दिर के पण्डितजी ने आपको ब्रह्मचर्य व व्यायाम के बारे में बताया और उसका पालन करने को कहा जिससे आपको सही दिशा मिली। आर्य समाज मन्दिर में आपको श्री इन्द्रजीत जी का सत्संग प्राप्त हुआ। उन्होंने आपको ईश्वर का ध्यान करना व महर्षि दयानन्द रचित सन्ध्या करना सिखाया। उनकी प्रेरणा से आपने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से आपके सारे व्यसन छूट गये और आपमें देश प्रेम व देश को स्वतन्त्र कराने की भावना उत्पन्न हुई। आपका स्वास्थ्य जो पहले खराब रहता था अब सन्ध्या, व्यायाम व योगाभ्यास से दर्शनीय हो गया। हमें आर्य समाजी मित्र, आर्य विद्वान प्रो. अनूप सिंह से ज्ञात हुआ कि आप अपने भव्य, प्रभावशाली व आकर्षक शरीर के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गये। लोग दूर-दूर से आपकी प्रशंसा सुनकर आपको देखने आने लगे।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी को आर्य समाज के सम्पर्क में आने से पूर्व अनेक दुर्व्यसन लग गये थे। दुर्व्यसनों के लिए पैसे चाहिये। इसके लिए वह पिता के पैसे भी चोरी कर लेते थे। दुर्व्यसनों को छुपकर किया जाता है, इसलिए अन्यों पर प्रायः यह प्रकट नहीं होते हैं। रामप्रसाद जी धूम्रपान, भांग का सेवन, चरित्र बिगाड़ने वाले उपन्यासों को पढ़ना व निरर्थक घूमना-फिरना व उसमें समय नष्ट करना जैसे लक्ष्य से भटके मनुष्य की भांति कार्य करते थे। रामप्रसाद जी का भाग्योदय हुआ। संयोग से आप आर्य समाज के सम्पर्क में आये। यहां आर्यों की संगति व उनसे मिलने वाले तर्क पूर्ण सुझावों ने आपको प्रभावित करना आरम्भ किया। व्यसनों से जीवन को होने वाली हानि का स्वरूप आप पर प्रकट होने से उनके प्रति अरुचि हो गई। हमने इस अल्प जीवन में अनेक लोगों को उठते हुए भी देखा है और वेदों व सत्यार्थ प्रकाश पढ़े व दूसरों को सदाचारी व आर्य बनाने वाले को नाना प्रकार के बुरे कार्य करते हुए भी पाया है जिनसे चरित्र का पतन होता है। यह सामान्य बात है, ऐसी घटनायें समाचार पत्रों व टीवी आदि पर भी यदा-कदा देखने को मिलती रहती हैं। रामप्रसाद जी में जो दूषण थे वह अज्ञानता, मन के नियन्त्रित न होने व इन्द्रियों के दास बनने के कारण उत्पन्न हुए थे, उनका दूर होना सरल था। उन्हें इनके दुष्प्रभावों का ज्ञान हुआ तो उन्होंने इसे त्याग दिया और इनके त्याग से आत्मा की शुद्धि प्राप्त करके एक अज्ञात युवा महात्मा बन गये या महात्मा बनने के मार्ग पर तेजी से बढ़ चले।

आर्य समाज में सन्ध्या, हवन, वहां के सच्चरित्र सदस्यों एवं विद्वानों के उपदेशों, उनकी संगति, उनसे वार्तालाप व उनकी सेवा का आप पर ऐसा प्रभाव हुआ कि आर्य समाज में रहकर आप अपना अधिक समय व्यतीत करने लगे। पिता आर्य समाज के वास्तविक स्वरूप से अपरिचित थे। उन्हें अपने पुत्र रामप्रसाद का वहां अधिक समय व्यतीत करना अच्छा नहीं लगता था। इससे वह उनसे क्रुद्ध हो गये। उन्होंने रामप्रसाद जी को वहां जाने से मना किया और अपशब्द कहकर धमकी भी दी की सोते समय उसका गला काट देगें। इस कारण घर से भी उन्हें निकाल दिया। इस कठिन परीक्षा को, जिसे छोटी अग्नि परीक्षा भी कह सकते हैं, हमारे पं. रामप्रसाद बिस्मिल पूरी तरह सफल हुए। यदि वह पिता के अनुचित सुझाव को मान लेते तो उनका जीवन निरर्थक होता और इतिहास में जो युगान्तरकारी घटना घटी वह न हुई होती। यहां हम स्वामी श्रद्धानन्द के उदाहरण को भी स्मरण कर सकते हैं जब इस नास्तिक युवा मुंशीराम, बाद में स्वामी श्रद्धानन्द कहलाये, के पौराणिक व अन्धविश्वासों को मानने वाले पिता नानक चन्द बरेली में महर्षि दयानन्द के सत्संग में लेकर जाते हैं, इस आशा के साथ कि स्वामी दयानन्द के सत्संग व उपदेश के प्रभाव से इसकी नास्तिकता समाप्त हो जायेगी। महर्षि दयानन्द के सत्संग से उनकी नास्तिकता भी समाप्त हुई, सारे दुर्व्यसन भी समाप्त हुए और एक दुर्व्यसनी युवक आगे चलकर अपने युग का युगपुरुष बन गया जिसका स्मारक गुरूकुल कांगड़ी आज भी अतीत के स्वर्णिम कारनामों को संजोय हुए उनकी साक्षी दे रहा है। लेखक स्वयं भी अपने एक आर्य मित्र श्री धर्मपाल सिंह की संगति से सन्, 1970 में अपनी 18-21 वय में आर्य समाज के सम्पर्क में आया था। उस समय उसमें भी ज्ञान न होने कारण अभक्ष्य पदार्थों का सेवन व अन्य कुछ दुर्बलतायें थी जो आर्य समाज के साहित्य के स्वाध्याय, विद्वानों के प्रवचनों व अपने मित्र के नाना विषयों पर वार्तालाप से दूर हुई थीं।

आपको मुंशी इन्द्रजीत से सत्यार्थ प्रकाश भी पढ़ने को मिला था। सत्यार्थ प्रकाश से आपको ईश्वर, जीवात्मा,

पिछले पृष्ठ का शेष

'भारत माता के वीर आदर्श सपूत शहीद रामप्रसाद बिस्मिल'

प्रकृति, धर्म, कर्म, यज्ञ, सन्ध्या, जीवन-मृत्यु के रहस्य, पुनर्जन्म, सुख, दुख, बन्धन, मोक्ष, देश भक्ति, मातृभूमि से प्रेम, उसकी सेवा, माता-पिता-गुरूजनों-सज्जनों-वृद्धों की सेवा, मत-मतान्तरों का वास्तविक ज्ञान व उन सबमें सत्य व असत्य मान्यताओं का मिश्रण, धर्म केवल व केवल एक है जिसमें सर्वांश सत्य होता है, असत्य बिल्कुल नहीं आदि का ज्ञान हुआ एवं मूर्तिपूजादि पोषित पौराणिक वा कथित सनातन धर्म सहित बौद्ध, जैन, नास्तिक मत, ईसाई व इस्लाम मत की अवैदिक व अज्ञानपूर्ण बातों का ज्ञान भी हो गया। इतना ज्ञान होना, इसके धारण की भावना का होना, इनकी इच्छा, संकल्प, प्रयत्न करना व इससे सहमत होना - यह सब एक महात्मा के लक्षण हैं। रामप्रसाद बिस्मिल भी इसके साक्षी बने व इन्हें अपने जीवन में धारण किया।

आर्य समाज, शाहजहांपुर में एक बार आर्य संन्यासी स्वामी सोमदेव जी का आगमन हुआ। स्वामीजी धार्मिक विद्वान होने के साथ-साथ देश की परतन्त्रता व उसके परिणामों से व्यथित थे। आपको इनका सत्संग प्राप्त हुआ। सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध एवं व्यवहार भानु जैसे ग्रन्थों को पढ़कर देश को आजाद कराने के बीजों का वपन तो आपके हृदय में हो ही चुका था। उनको खाद व पानी स्वामी सोमदेव जी के सत्संग, वार्तालाप व सेवा से प्राप्त हुआ। उनके परामर्श से आपने देश की आजादी के लिए कार्य करने का अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। आर्य मनीषी डा. भवानी लाल भारतीय ने लिखा है कि स्वामी सोमदेव जी की शिक्षाओं से प्रभावित होकर रामप्रसाद बिस्मिल ने प्रतिज्ञा की - 'अंग्रेजी साम्राज्य का नाश करना मेरे जीवन का प्रमुख लक्ष्य होगा।' इस प्रतिज्ञा के बाद आपने युवकों का एक संगठन बनाया। इस संगठन की योजनाओं को पूरा करने के लिए शस्त्रों की आवश्यकता थी और उन्हें खरीदने के लिए धन चाहिये था। आपने धन की प्राप्ति के लिए एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था - 'अमेरिका को स्वतन्त्रता कैसे मिली?' इसकी बिक्री से प्राप्त धन अपर्याप्त था। दूसरा उपाय यह किया कि पास के एक गांव पर सशस्त्र हमला कर धन लूटा गया। यह ध्यान रखा गया कि किसी को भी शारीरिक क्षति नहीं पहुंचानी है। पराधीन भारत माता को आजाद करने के लिए उसी की सन्तानों से धन प्राप्त करने का उस समय उन्हें यही तरीका दिखाई दिया। इस घटना से आप पुलिस की जानकारी में तो आ गये परन्तु गिरफ्तारी से बचते रहे। सन् 1920 में राजनैतिक कैदियों व अन्य अपराधियों को आम माफी दिये जाने के बाद आपके नाम जारी वारण्ट भी रद्द हो गया। तब आप अज्ञात स्थान से शाहजहांपुर आ गये। जब आपने युवकों का सशस्त्र दल बनाया तो सुप्रसिद्ध देशभक्त, शहीद व आपके अभिन्न मित्र अशफाक उल्ला खां भी आपके सम्पर्क में आये। दोनों में पक्की दोस्ती हो गई। अशफाक को अपने मित्र बिस्मिल जी को बहुत निकट से देखने का अवसर मिला। वह भी आर्य समाज मन्दिर में आने लगे। हम अनुमानत: कह सकते हैं कि उन्होंने आर्य समाज के सत्य स्वरूप को काफी हद तक समझा था। एक बार कुछ मुसलमानों ने आर्य समाज पर आक्रमण कर दिया। अशफाक उल्ला उस समय आर्य समाज मन्दिर में पं. रामप्रसाद बिस्मिल के साथ ही थे। अशफाक ने रामप्रसाद जी के साथ मिलकर आक्रमणकारियों को ललकारा था और उनके मंसूबे विफल कर दिये थे। इस मित्रता को सच्ची मित्रता कह सकते हैं और हिन्दू-मुस्लिम संबंधों की एक अच्छी मिसाल भी। इन दोनों की मित्रता के अनेक प्रसंग हैं, जो प्रेरणाप्रद हैं।

पं. राम प्रसाद बिस्मिल प्रसिद्ध शायर भी थे। आपकी रचनायें आजादी के आन्दोलन के दिनों में सभी लोगों की जुबान पर होतीं थीं। आज भी उनमें ताजगी है, देश प्रेम व हृदय को छू लेने की अवर्णनीय क्षमता है। नमूने के रूप में कुछ को देखते हैं। फांसी के फन्दे को चूमने से पूर्व उन्होंने कहा था - 'मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे। बाकी न मैं रहूं और न मेरी आरजू रहे।। जब तक कि तन में जान रगों में लहू बहे। तेरा ही जिकर और तेरी जस्तजू रहे।।' भारतमाता के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करते हुए आपने लिखा था - 'यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों बार भी। तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी।। हे ईश भारत वर्ष में शत बार मेरा जन्म हो। कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।।' देश प्रेम पर उनकी पंक्तियां हैं - ''हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर, हमको भी पाला था मां-बाप ने दुख सह-सह कर। वक्ते रूखसत उन्हें इतना भी न आये कहकर, गोद में कभी आंसू बहें जो रूख से बहकर।। तिफ्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने का। देश सेवा का ही बहता है अब तो लहू नस-नस में। हमने जब वादि-ए गुरबत में कदम रखा था। दूर तक यादें वतन आई थी समझाने को।'' उनकी पंक्तियों 'सर फरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू-ए कातिल में है।'' पर तो एक फिल्मी गीत बन चुका है जो कभी देश के बच्चे-बच्चे की जुबान पर होता था। मरने से पूर्व उन्होंने लिखा - 'मरते बिस्मिल, रोशन, लाहिड़ी, अशफाक अत्याचार से, पैदा होगें सैकड़ों इनके रूधिर की धार से।'

अन्याय करना व अन्याय सहना दोनों ही गलत हैं। अंग्रेज देशवासियों पर अमानवीय अत्याचार करते थे। जाते-जाते भी वह देश का विभाजन करा गये और इस बात का भी प्रयास किया कि खण्डित भारत सबल देश न बन सके। रामप्रसाद बिस्मिल जी अंग्रेजों के भारतीयों के प्रति अन्याय को दूर कर देशवासियों के लिए सम्मान व ईश्वर व प्रकृति प्रदत्त समानता व स्वतन्त्रता के अधिकारों को प्राप्त कराना व सभी सामाजिक बन्धुओं व देशवासियों को दिलाना चाहते थे। इसी विचारधारा ने उन्हें सशस्त्र क्रान्ति का नायक बनाया। हम जब विचार करते हैं कि कोई किसी की सम्पत्ति को छीन लें या उसकी अचल सम्पत्ति पर कब्जा कर लें, तो उस अन्यायकारी को कैसे हटा कर सम्पत्ति को मुक्त कराया जाये?इसके दो ही तरीके हैं कि पहले उसे बताया व समझाया जाये कि उसने गलत किया है, वह सम्पत्ति लौटा दें। प्राय: सम्पत्ति छीनने वाला व लूटने वाला अधिक बलवान होने के कारण सत्य के आग्रह करने पर सम्पत्ति लौटाता नही हैं। यदि ऐसा होता तो चीन ने हमारी भूमि अब तक हमें लौटा दी होती। पाकिस्तान ने अनधिकृत कश्मीर हमें सौंप दिया होता। यहां तो अन्य भागों पर भी कब्जा करने के मंसूबे बनायें जाते हैं और गुप्त रूप से उन पर कार्य भी किया जाता है जिसमें हमारे निर्दोष लोग अपने प्राणों से हाथ धो बैठते हैं। जनता के हाथ में ताकत तो होती नहीं। वह सरकार की ओर देखती है। छीनी गई अपनी सम्पत्ति को अपने शत्रु से लेने का दूसरा तरीका केवल बल प्रयोग ही बचता है। यही तरीका बाद में महान देशभक्त नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने भी अपनाया जिसका सारे देश से उनको समर्थन मिला। उनका नारा - 'तुम मुझे खून दों, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' आज भी कानों में गूंज जाता है। ऐसा ही कुछ हमारे देशभक्त क्रान्तिकारी सोचते थे कि कैसे अपने अपमान को रोका जाये, हमें उचित अधिकार प्राप्त हों और देश स्वतन्त्र हो। उनके द्वारा अपनाया गया मार्ग गलत नहीं था। रामप्रसाद जी के सामने पृष्ठभूमि कुछ अलग रही होगी। उन्होंने निर्णय किया कि शस्त्रों के लिए धन की जो आवश्यकता है उसे सरकारी खजाने को लूट कर पूरा किया जाये। वस्तुत: खजाने का धन भी जनता व देशवासियों का ही धन था। योजना बनाई गई और उसके अनुसार 9 अगस्त, सन् 1925 की रात्रि को जब रेल लखनऊ के निकट काकोरी स्टेशन पर पहुंचीं, तो उसे रोक कर उसमें सरकारी खजाने से 10,000 रूपये लूट लिए गये। यह घटना अपने आप में ही अत्याचारी अंग्रेजों के लिए एक सबक था कि उनके लाख प्रयत्नों, लोगो को दबाने व कुचलने के बाद भी ऐसी घटना घट गई। यह उनके लिए अपमानजनक था। बौखला कर इस घटना में शामिल देशभक्तों की धर पकड़ का अभियान चला। रामप्रसाद बिस्मिल पकड़ लिये गये। उन पर दबाव डाला गया कि वह अपने सभी साथियों के नाम बताये। उन्हें निकृष्टतम् यातनायें दी गईं। वह सब उन्होने अपने देशानुराग के कारण सहन की। सरकार की ओर से दिखावे का मुकदमा चलाया गया और उन्हें मृत्यु दण्ड के रूप में फांसी की सजा दी गई। उनके अन्य साथियों अशफाक उल्ला खां, रोशन सिंह व राजेन्द्र लाहिड़ी को भी फांसी की सजा दी गई। हम जब विचार करते हैं तो हमें लगता है कि यह लोग अपनी मातृभूमि से प्रेम करते थे। उसे आजाद कराना चाहते थे। अंग्रेजों द्वारा जो भारतीयों का अपमान किया जाता था उसका यह लोग विरोध करते थे। इस सबका तो इन्हें पारितोषिक मिलना चाहिये था। यदि वस्तुत: अंग्रेज न्यायप्रिय होते तो कदापि इन देशभक्त युवकों को सजा न देते। अपने देश में भी तो वह इसी प्रकार से देश भक्ति के कार्य करते हैं। इससे यह सिद्ध है कि सत्य व न्याय का कोई गुण हमारे तत्कालीन शासकों में नही था। हमें देश के उन तत्कालीन बड़े नेताओं से भी शिकायत हैं जो इन युवकों को फांसी दिए जाने पर मौन व खामोश थे। इतना तो कह ही सकते कि यह निर्णय गलत है। अस्तु। पं. रामप्रसाद बिस्मिल को काल कोठरी में रखा गया। वहां का वातावरण पशुओं से भी बदतर था। इस पर भी उन्होंने वहां योग साधना की और यह एक सुखद आश्चर्य है कि उस दूषित वातावरण में जहां मनुष्य जीवित नहीं रह सकता, उनके शरीर का भार घटने के स्थान पर बढ़ा। वहां रहते हुए उन्होंने अपनी आत्म कथा भी लिखी, जो सौभाग्य से उपलब्ध है और सभी युवक व वृद्धों के लिए पठनीय है। स्कूली शिक्षा में भी उसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहये। परन्तु कहें किसे, सर्वत्र अहितकर वातावरण है। अब से 86 वर्ष पहले, 19 दिसम्बर, सन् 1927 को उन्हें गोरखपुर में फांसी पर चढ़ाया गया। प्रात: उठकर उन्होंने स्नान कर व्यायाम व सन्ध्या की और हवन किया। फांसी के फन्दे पर खड़े होकर अपनी इच्छा व्यक्त की और कहा - 'I wish the downfall of British Empire'. यह कह कर वेदमन्त्र 'ओ३म् विश्वानिदेव सवितरदुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्न आ सुव।' कह कर फांसी पर झूल गये। इस समय आपकी आयु लगभग 29 वर्ष थी। देश को आजाद कराने की उनकी भावना आंशिक रूप से सन् 1947 को पूरी हुई। आजाद होने पर भी उनके स्वप्नों के अनुरूप देश नहीं बन सका। आज भी सत्य व न्याय पर आधारित अध्यात्म ज्ञान से सम्पन्न देश के निर्माण का कार्य शेष है जो कालान्तर मे पूरा होगा। युवा पीढ़ी उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करे, यह अपेक्षा की जाती है। उनके बलिदान दिवस के अवसर पर हमारी पं. राम प्रसाद बिस्मिल को हार्दिक श्रद्धांजलि। उनके अन्य साथी अशफाक उल्ला खां, रोशन सिंह व राजेन्द्र लाहिड़ी जी को श्री सश्रद्ध सादर नमन।

पता: 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
मो.:-: 09412985121

माता प्रेमलता शास्त्री के आकस्मिक देहावसान पर शोक व्यक्त किया

गुरुकुल आश्रम आमसेना के संचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी ने कहा कि अखिल भारतीय महर्षि दयानन्द संघ की महामन्त्री माता प्रेमलता खन्ना (शास्त्री) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित दयानन्द सेवाश्रम संघ की देख-रेख में आसाम, नागालैण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि प्रान्तों में विद्यालय एवं छात्रावास चल रहे हैं। इन आश्रमों का संचालन सार्वदेशिक सभा की ओर से स्व. पृथ्वीराज शास्त्री संचालन करते थे उनके स्वर्गवास के पीछे उनकी धर्मपत्नी माता प्रेमलता खन्ना (शास्त्री) ने इस दयानन्द सेवाश्रम की बागडोर सम्भाली तथा शास्त्री जी से भी बढ़-चढ़कर इस सेवाश्रम संघ के कार्य को आगे बढ़ाया। दिल्ली में बालक-बालिकाओं के दो अलग-अलग गुरुकुल (आवासीय छात्रावास) का संचालन किया। इन आश्रमों में पूर्वांचल के सैकड़ों बच्चे रहकर विद्याध्ययन के साथ वैदिक धर्म की शिक्षा भी प्राप्त करते हैं। माता जी के अचानक जाने से उनके पीछे इन सब आश्रमों के सामने अन्धकार सा छा गया है, क्योंकि वे इनकी प्राण सर्वेसर्वा थी। माता जी के जाने से दयानन्द सेवाश्रम की ही नहीं, बल्कि सारे आर्य जगत् की अपूर्णीय क्षति हुई है।

गुरुकुल परिवार ने माता जी के स्वर्गवास पर गहरा शोक प्रकट करते हुए उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

- स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, आचार्य, गुरुकुल आश्रम

आर्य समाज की गतिविधियाँ

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल का 50वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

संस्था का 50वां वार्षिक महोत्सव 3 से 6 नवम्बर, 2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया इस शुभ अवसर पर गंगा स्नान मेले के कारण गुरुकुल के विशाल पण्डाल में हजारों की संख्या में स्थानीय उत्तर भारत की श्रद्धालु जनता उपस्थित हुई विद्यालय में अनेकों सम्मेलनों के साथ-साथ यजुर्वेद परायण महायज्ञ आयोजित किया गया।

इस शुभावसर पर आर्य जगत के अनेक विद्वान स्वामी ओमानन्द, स्वामी विश्वानन्द (गुरुकुल मथुरा), साध्वी प्राची आर्य, स्वामी चन्द्रवेश (मेरठ), स्वामी सत्यवेश, स्वामी विदेह योगी, स्वामी रामप्रियदास (छत्तीसगढ़) आदि उपस्थित हुए व अपने मुखारविंद से वेदों का रसपान करवाया। गुरुकुल के संस्थापक स्वामी आनन्दवेश जी महाराज ने यजुर्वेद पारायण महायज्ञ पर मंत्रों की सुन्दर ढंग से व्याख्या कर जनमानस को भाव-विभोर किया। आचार्य यज्ञवीर शास्त्री ने यज्ञ के ब्रह्मा के आसन को सुशोभित किया। बिजनौर से सांसद श्री कुंवर भारतेन्दु जी यज्ञ कार्यक्रम में उपस्थित हुए गुरुकुल छात्रों व आचार्य वृंद द्वारा उनका माल्यार्पण से भव्य स्वागत किया गया। माननीय सांसद द्वारा विद्यालय में शौचालय व्यवस्था को दुरूस्त व विस्तार हेतु 4 नवीन शौचालयों के निर्माण की घोषणा की व शुक्रताल ग्राम को सांसद आदर्श ग्राम घोषित करने का वादा किया।

विद्यालय के नव-निर्मित भवनों का लोकार्पण श्री कौशल राज शर्मा जिलाधिकारी मु. नगर द्वारा किया गया व गौशाला के विशाल हॉल का उद्घाटन आर्य जगत के भामाशाह श्री माया प्रकाश त्यागी जी (कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली), द्वारा किया गया। उन्होंने गौशाला विस्तार हेतु नए भवन का शिलान्यास व सहायता राशि 21000/- रुपये प्रदान की।

संस्था के नवनिर्वाचित प्रधान विजय कुमार, श्री चौ. हरवीर आर्य, श्री कृष्ण शुक्रताल, सत्संग मण्डल बसेड़ा, भोकरहेड़ी, बाबरी, चौ. उदयवीर सिंह आर्य शाहपुर देवेन्द्र कौल एड, अमित राठी, महेश कुमार माहेश्वरी ने यज्ञमान के पद को सुशोभित किया।

विश्व शांति सम्मेलन, शिक्षा, समाज सुधार, नशाबन्दी, व्यायाम एवं राष्ट्र रक्षा सम्मेलनों का आयोजन किया गया जिसमें बाहर से आए हुए अनेक विद्वानों ने जन-मानस का मार्ग दर्शन किया व समाज में व्याप्त अनेक बुराईयों पर कुठाराघात किया।

कार्यक्रम में उपस्थित व गंगा मेले पर पधारे हजारों श्रद्धालुओं हेतु भण्डारे की सुव्यवस्था की गई जिसमें मुख्य रूप से डॉ. तिमराज मु. नगर, विजय ठेकेदार, राजीव जैन, श्रीराम मोटर एवं जनरल फाईनेंस, श्री राजकुमार नागपाल, शेखर लुधियाना, मनोज चांदनी चौक, श्री रोशन लाल गुप्ता आदि दानवीरों ने सहयोग किया।

कार्यक्रम का आयोजन व व्यवस्था आचार्य इन्द्रपाल, आचार्य प्रेमशंकर, आचार्य पवन वीर, सोमवीर सिंह, विकास शास्त्री, मनोज कान्त शास्त्री द्वारा की गई।

कार्यक्रम पर पधारने हेतु सभी आर्यजनों, दानवीरों, श्रद्धालुओं के प्रति संस्था पदाधिकारियों ने अपना हार्दिक आभार व्यक्त किया।

- आचार्य इन्द्रपाल, अधिष्ठाता, गुरुकुल संस्कृत मा. वि. शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, मो.:-9411929528

श्री रामनाथ सहगल आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संयुक्त तत्वावधान में डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में आयोजित महात्मा हंसराज दिवस समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष दिये जाने वाले सम्मान में श्री पूनम सूरी, प्रधान डी. ए. वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा सर्वप्रथम सम्मान आर्य सामज के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रामनाथ सहगल को आज 90 वर्ष होने पर उनके द्वारा आर्य समाज और डी. ए. वी. को दी गई सेवाओं के लिए आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हम उनके स्वास्थ्य लाभ एवं दीर्घायु की कामना करते हैं ताकि वे इसी तरह समाज सेवा करते हुए हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

वेद विदुषी आचार्या सूर्यादेवी गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से सम्मानित

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार के रजत जयन्ती वर्ष पर इलाहाबाद संग्रहालय में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसमें वेद विदुषी आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी को 21000/- रुपये नकद, स्मृति चिन्ह तथा अंग वस्त्र देकर पूर्व न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय ने सम्मानित किया। यह पुरस्कार सूर्या देवी कृत ''ब्रह्मवेद है अर्थवेद'' पर दिया गया। माननीय न्यायमूर्ति ने हर्ष प्रकट करते हुए उनकी विद्वता की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि समिति द्वारा विद्वानों को सम्मानित करना वैदिक साहित्य के उन्नयन की दिशा में अत्यन्त उत्तम कार्य है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. किश्वर जबी नसरीन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि लोगों को अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना चाहिए। विद्या किसी जाति व व्यक्ति की बपौती नहीं है उन्होंने कहा कि आपकी कृतित्व ने यह प्रमाणित कर दिया कि नारी अबला नहीं सबला है वह परिश्रम से सब कुछ कर सकती है। समिति के प्रधान राधे मोहन ने अपने स्वागत भाषण में गंगा प्रसाद उपाध्याय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूज्य उपाध्याय जी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु समिति अब तक देश के 24 वरिष्ठ वैदिक विद्वानों को पुरस्कृत कर चुकी है और वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की दिशा में यह क्रम भविष्य में चलता रहेगा। समिति के मंत्री डॉ. आनन्द कुमार श्रीवास्तव ने प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए उपाध्याय जी की महत्त्वपूर्ण कृतियों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए स्वाध्याय करने की प्रेरण दी। श्री गोपाल जी बरनवाल ने धन्यवाद दिया। श्रीमती प्रतिमा गुप्ता, कृष्णा गुप्ता और कु. अंजली केसरवानी ने मंत्र पाठ और स्वागत गीतों से जन-मानस का मन मोह लिया। इस अवसर पर संग्रहालय का सभागार प्रबुद्ध नर-नारियों से खचाखच भरा हुआ था। अन्त में प्रसाद वितरण के पश्चात सभा विसर्जित की गई।

- राधे मोहन-प्रधान

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

ज्यादा अदरक की चाय पीने से करें परहेज

अदरक की चाय का सेवन करना हमारी सेहत के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है पर अगर हम हर रोज इसका सेवन करते है तो यह हमारी सेहत के लिए नुक्सानदायक साबित हो सकता है। वैसे तो अदरक की चाय पीने के कई फायदे है पर अगर किसी चीज का सेवन अधिक किया जाएं तो यह सेहत को नुक्सान पहुंचा सकती है। अदरक की चाय अधिक पीने से कुछ साइड इफेक्ट भी हो सकते है।

- अदरक की चाय का अधिक सेवन करने से हमारी पाचन क्रिया पर असर पड़ सकता है और हमें पेट संबंधित रोगों का सामना करना पड़ सकता है। ज्यादा अदरक की चाय पीने से एसिडिटी की समस्या बढ़ सकती है।

- अदरक की चाय का अधिक सेवन करने से मुंह और सीने में जलन की समस्या पैदा हो जाती है।

- डायबिटीज के रोगियों के लिए भी जहाँ अदरक का अधिक सेवन करना नुक्सानदायक साबित होता है, इसीलिए उन्हें भी अदरक की चाय का सेवन कम करना चाहिए।

- अदरक की चाय का अधिक सेवन करने से अनिद्रा जैसी बीमारी का सामना करना पड़ सकता है और रात के समय तो अदरक की चाय का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

- पित्त की पथरी के रोगियों को भी अदरक का सेवन कम करना चाहिए।

- रक्त को पतला करने वाली दवाओं के साथ भी अदरक का सेवन अधिक करना नुक्सानदायक साबित हो सकता है।

- हर रोज खाली पेट भी अदरक की चाय का सेवन करना नुक्सानदायक साबित होता है।

- इण्टरनेट द्वारा संकलित

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 12–13 दिसम्बर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 11 दिसम्बर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक
11 से 17 दिसम्बर, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

यज्ञ महिमा

**ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रं पदमंगिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त।।**

—ऋ० १०/६७/२ ; अथर्व० २०/६१/२

ऋषिः—अयास्यः।। देवता—बृहस्पतिः।। छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप्।।

विनय—'यज्ञ–यज्ञ' सब कहते हैं, परन्तु यज्ञ के मूलतत्त्व को जानने वाले कोई विरले ही होते हैं। हम तो इतना जानते हैं कि जगत्–हित के लिए स्वार्थत्याग के कार्य करना यज्ञ है। इतना ठीक भी है, परन्तु यज्ञ के प्रथम रूप से हम बहुत दूर हैं। यदि हमें कहीं वह रूप दीख जाए तब तो हम देख लें कि यज्ञ ही हमारा प्राण है, हमारा जीवन है; यज्ञ तो हमारे एक–एक श्वास में होना चाहिए। इस यज्ञ के 'प्रथम धाम' (मुख्य स्थान) को जो साक्षात् देख लेते हैं वे अंगिरस् कहाते है; क्योंकि ऐसे लोग इस जगत्–शरीर के अंगों के रस होते हैं। ये वे महात्मा पुरुष होते हैं जो संसार को ठीक रास्ते पर ले–जाते हुए संसार के प्राणरूप होते हैं। संसार में जो पाप, अधर्म और स्वार्थ की शक्तियाँ प्रवृत्त हो रही हैं उनसे संसार का जीवन–रस सूख जाए यदि ये 'अंगिरस्' उसमें निरन्तर धर्म–धारा न बहाते रहें। इन अंगिरसों को बार–बार प्रणाम है।

परन्तु हमें तो यह जानना चाहिए कि ये 'अंगिरस्' महात्मा कैसे बनते हैं?इनके लक्षण क्या हैं?इनके चार लक्षण हैं– (१) ये सत्य ही बोलते हैं, ये सत्य का ही वर्णन करते हैं। (२) केवल इनकी वाणी में ही सत्य नही होता किन्तु इनके ध्यान व विचार में भी कुटिलता नहीं आने पाती; इनके विचार में–मनमें–भी असत्यता नहीं आती (अतएव) इनकी बुद्धि इतनी सच्ची और प्रकाशपूर्ण होती है कि इन्हें समष्टि–बुद्धि–रूप जो 'द्यौ' है उसके पुत्र कहना चाहिए; और (३) ये वीर–पुत्र होते हैं, क्योंकि संसार सदा अज्ञान–शत्रु पर विजय पाने के लिए अग्रसर रहता है, (४) और ये 'द्यौ के पुत्र' अपने में 'विप्रपद' को, ज्ञानमय व्यापक पद को धारण किये होते हैं– भगवान् को, भगवान् के एक ज्ञानमय व्यापक रूप को, अपने में धारण किये फिरते हैं।

हे यज्ञकर्मों द्वारा ऊँचे चढ़ने की इच्छा रखने वाले और यत्न करने वाले भाइयो ! अंगिरसों के इन चार लक्षणों को अपने में रमाते चलो, रमाते हुए चढ़ते चलो।

शब्दार्थ—**ऋतं शंसन्तः**=सत्य ही कहने वाले, **ऋजु दीध्यानाः**=अकुटिल ध्यान करने वाले, **असुरस्य**=प्रज्ञावाले **दिवः**=दिव के, 'द्यौ' के **वीराः पुत्रासः**=वीर पुत्र, **विप्रं पदं दधानाः**=और जो ज्ञानमय या व्यापक पद को धारण किये हुए हैं, ऐसे **अंगिरसः**=अंगिरस लोग **यज्ञस्य प्रथमं धाम**=यज्ञ के परम मुख्य स्थान को **मनन्त**=जानते हैं।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/– रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/– रुपये का एक वेद सैट 20 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 25 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/– रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।